पंजीयन संख्या : 68939/98 अंक - 12, वर्ष 24

ज्ञान तत्व

समाज शास्त्र | अर्थ शास्त्र | धर्म शास्त्र | राजनीति शास्त्र

450

-: सम्पादक :-

बजरंग लाल अग्रवाल

रामानुजगंज (छ.ग.)

सत्यता एवं निष्पक्षता का निर्भीक पाक्षिक

पोस्ट की तारीख 01.06.2024

प्रकाशन की तारीख 16.05.2024

पाक्षिक मूल्य - 2.50/- (दो रूपये पचाय पैसे)

''शराफत छोड़ो, समझदार बनो''

''सुनो सबकी, करो मन की''

''समस्याओं के प्रणेता, कर कानून नेता''
''समाधान का आधार ज्ञान यज्ञ परिवार''

''चाहे कोई अत्याचार, नहीं करेंगे नही सहेंगे''
''हमें सुराज्य नही, स्वराज्य चाहिए''

विविध विषयों पर मुनि जी के लेख

नवनिर्मित फिल्म प्रयोग पर चर्चा :

फिल्मकार गोविंद मिश्रा जी ने मदारी आर्ट्स के साथ मिलकर एक नई फिल्म बनाई है जिसका नाम है "प्रयोग"। यह फिल्म रामानुजगंज शहर की कुछ सत्य घटनाओं के आधार पर बनाई गई है। इस फिल्म में एक दृश्य दिखाया गया है जिसमें कबीर का एक मित्र रंका का थानेदार है। रंका शहर के आसपास रामानुजगंज के लोगों को बस में जाते समय लूट लिया जाता है। लूट के शिकार रामानुजगंज के नागरिक राधे बाबू, कबीर से निवेदन करते हैं कि अपराधी पकड़े जाएं। कबीर थानेदार से बात करता है थानेदार भी तैयार हो जाते हैं और यह शर्त रखते हैं कि हम थाने के लोग अपराधियों को पकड़ कर ले आएंगे उन अपराधियों की पहचान तो राधेबाबू को करनी पड़ेगी यदि पहचान नहीं होगी तो उन्हें तुरंत जमानत मिल जाएगी। राधेबाबू दरोगा से यह आश्वासन चाहते हैं कि यदि हम उनको पहचान लेंगे यदि हम गवाही दे देंगे पर अपराधियों से हमारी सुरक्षा की गारंटी दरोगा साहब ले। दरोगा ने गारंटी लेने से इनकार कर दिया और गवाहों ने गवाही देने से इनकार कर दिया। जब दरोगा से इसका मार्ग पूछा गया तो दरोगा ने बताया की कबीर भाई अगर गवाह गवाही देगा ही नहीं अपराधी के पक्ष में नेता का फोन आएगा ही वकील अपराधी के पक्ष में खड़ा होगा ही जज अपराधियों से सहानुभूति रखेगा ही तो तुम यह बताओ कि मैं ही अपना नुकसान क्यों उठाऊं। मैं शिकार करूं जज वकील नेता उस शिकार से अपना पेट भरे मैं ऐसी मूर्खता क्यों करूं। कबीर ने थानेदार से पूछा की अरे भाई तो यह बताओ कि आगे इसका क्या भविष्य हो सकता है। थानेदार ने कहा कि कबीर जिस दिन आकर तुम यह आश्वासन दे दोगे कि गवाह गवाही देगा नेता अपराधियों के पक्ष में खड़ा नहीं होगा वकील सत्य के पक्ष में खड़ा होगा जज सत्य को ही न्याय समझेगा उस दिन यह थानेदार भी अपना हिस्सा छोड़ने के लिए तैयार है। कबीर यह बात सुनकर निरुत्तर हो जाता है और सोचता है कि इसमें गलत कौन है?

उसी फिल्म में एक दूसरा दृश्य दिखाया गया है, जहां कबीर रामानुजगंज से कुछ दूर पर झारखंड के गढ़वा रोड स्टेशन पर टिकट कटाने के लिए अपने मित्र के साथ खड़ा है। कबीर की लाइन धीरे-धीरे आगे बढ़ रही है और दूसरे दबंग लोग धक्का देकर आगे से टिकट ले आ रहे हैं कुछ लोग टिकट काउंटर में अलग से घूस देकर भी पहले टिकट ले आ रहे हैं। कबीर का मित्र कबीर से पूछता है कि हमारी ट्रेन छूट सकती है यदि आप अनुमति दें तो मैं भी इसी तरीके से टिकट ले आऊं। कबीर की अनुमति से कबीर का मित्र धक्का देकर कुछ लोगों को गिरा देता है और जाकर टिकट ले आता है। कबीर धक्का देने वाले अपने मित्र से शिकायत करता है कि तेरे धक्का देने से वह लाइन में लगी हुई महिला गिर गई और तुमने उसको नहीं

उठाया तो कबीर का मित्र बोलता है कि कबीर लोकतंत्र में तो कमजोर ही धक्का खाता है, मजबूत आगे जाकर टिकट ले आता है। कबीर प्रश्न करता है कि क्या यह उचित है? तो कबीर का मित्र कहता है कि क्या यह उचित है कि हम लोग मूर्ख शरीके खड़े रह जाएं और धक्का देने वाले ट्रेन में बैठकर चले जाएं। कबीर का मित्र कहता है की स्थिति के अनुसार हम मूर्ख जैसे खड़े रह जाएं या धक्का देकर टिकट ले आवे या धक्का देने वाले को झापड़ मार दें यह निर्णय हमारे ऊपर है इसके लिए किसी सिद्धांत की जरूरत नहीं है। कबीर गहराई से सोचता है की उसके मित्र के प्रश्न का उत्तर कबीर के पास नहीं है लेकिन इस प्रश्न का उत्तर तो अवश्य ही खोजा जाना चाहिए कि हम शरीफ रहे या सब की तरह धक्का देकर अपना काम निकाल लें अथवा धक्का देने वाले को झापड़ मार कर थाने का चक्कर काटते रहे। जिस तरह पहले दृश्य पर कबीर निरुत्तर था इस तरह आज वाले दृश्य पर भी कबीर निरुत्तर है।

हम चर्चा कर रहे हैं अब तीसरा दृश्य है । इस दृश्य में कबीर समाजवादी पार्टी के टिकट पर नगर पालिका का चुनाव लड़ता है। वह शहर में यह घोषणा करता है कि मैं चुनाव जीत जाऊंगा तो चोरी डकैती दादागिरी से पूरी तरह मुक्ति दिला दूंगा अपने शहर को सुरक्षित घोषित कर दूंगा। कबीर चुनाव जीत जाता है नगर पालिका का अध्यक्ष बन जाता है। अध्यक्ष बनने के बाद वह कार्यालय जाता है और अपने मुख्य नगर पालिका अधिकारी से विचार विमर्श करता है कि हम चोरी डकैती और दादागिरी रोकने में क्या भूमिका अदा कर सकते हैं । मुख्य नगर पालिका अधिकारी कबीर को यह समझाता है की नगर पालिका की इसमें किसी प्रकार की कोई भूमिका नहीं है यह कार्य तो सिर्फ पुलिस का है। नगर पालिका साफ-सफाई, प्रकाश इन्हीं पर ध्यान दे सकती है अन्य कार्यों पर नहीं। कबीर पूछता है कि हमारे अधिकार रामानुजगंज की जनता हमें देती है या कोई अन्य इकाई देती है तो कबीर को बताया जाता है कि जनता तो सिर्फ चुनती है, अधिकार तो हमें सरकार देती है। सरकार ने पुलिस को कुछ अधिकार दिए हैं पुलिस की वे सीमाएं हैं नगर पालिका को कुछ अलग अधिकार दिए हैं नगर पालिका की अलग सीमाएं हैं उन सीमाओं को पालन करना हमारी मजबूरी है। कबीर परेशान हो जाता है और कुछ दिनों में ही अपने पद से त्यागपत्र दे देता है, वह कहता है कि मैं ऐसे गुलाम पद पर नहीं रहूंगा जिसे जनता के द्वारा कोई अधिकार प्राप्त नहीं है। मैं अपने पाठकों को यह बात साफ कर दूं की प्रयोग फिल्म में जो भी दृश्य दिखाए गए हैं वह सब सत्य बातें हैं एक शहर में यह सब घटनाएं प्रयोग के रूप में हो चुकी हैं।

कबीर बचपन में ही यह निश्चय कर लेता है कि मुझे अपने शहर को अपराध नियंत्रित बनाना है, इसके लिए चोरी डकैती और दादागिरी को सबसे पहले रोकना आवश्यक है। नगर पालिका में अपनी असफलता के बाद कबीर का एक मित्र मध्य प्रदेश का गृह मंत्री बनता है और दूसरा मित्र केंद्र सरकार में

श्रम राज्य मंत्री। इतनी शक्ति होने के बाद भी कबीर अपने जिले में चोरी डकैती और दादागिरी रोकने में सफल नहीं हो पाता। 1984 में कबीर का सत्ता से मोह भंग हो जाता है और कबीर यह विचार करता है कि भारत में संविधान का शासन है और कहीं ना कहीं संविधान में ऐसी अवश्य ही कमी है कि हम किसी भी क्षेत्र से चोरी डकैती दादागिरी जैसे अपराधों को रोकने में सफल नहीं है। कबीर संविधान पर विचार मंथन शुरू कर देता है 15 वर्षों तक संविधान पर विचार मंथन करने के बाद कबीर इस नतीजे पर पहुंचता है कि देश का संविधान गांधी के मरते ही राजनेताओं ने जानबूझकर विकृत कर दिया। गांधी कहते थे लोक नियंत्रित तंत्र और संविधान निर्माता ने बना दिया लोक नियुक्त तंत्र। जब तक लोक नियंत्रित तंत्र नहीं होगा तब तक किसी समस्या का समाधान नहीं हो सकेगा 4 नवंबर 1999 को संविधान की इस कमजोरी को स्वीकार कर लिया जाता है। 15 वर्षों के मेहनत के बाद एक लोक नियंत्रित तंत्र का संविधान का प्रारूप तैयार किया जाता है और यह प्रारूप देश को समर्पित किया जाता है इसके साथ-साथ यह योजना भी बनती है कि किसी एक शहर में इस प्रारूप के अनुसार व्यवस्था बनाने की जरूरत है।

रामानुजगंज के लोक स्वराज के सफल प्रयोग के बाद कबीर देश भ्रमण पर निकल जाता है जगह-जगह लोगों को समझाता है समझाते समझाते वह ऋषिकेश चला जाता है। गंगा के किनारे 2 वर्ष तक चिंतन करता है चिंतन करते-करते एक दिन कबीर को स्वप्न में गंगा माता से चर्चा होती है इस चर्चा में कबीर इस बात को रखता है की किस तरह वह धर्म स्थान पर गया धर्म क्षेत्र में खोजा राजनीति के क्षेत्र में गया दिल्ली में रहकर लंबे समय तक खोजा लेकिन कबीर को कहीं कुछ नहीं मिल सका। गंगा माता कबीर को कहती है कि यह ऋषिकेश धर्म की मंडी है दिल्ली राजनीति की मंडी है इन मंडियों में तुम खोजते रह जाओगे कुछ भी नहीं मिलेगा। यदि तुम्हें सच्चाई का अनुभव करना है तो तुम रामानुजगंज के उन्ही गरीब लोगों के बीच जाओ उन्ही अशिक्षित लोगों के बीच जाओ जहां से राम ने वानर भालुओं की मदद से अपराधियों पर विजय प्राप्त की थी। यह धर्म स्थान और राजनीति के स्थान प्रयोग करने के लिए नहीं है। गंगा माता की इस सलाह से कबीर लौटकर फिर से रामानुजगंज आ जाता है और रामानुजगंज में आकर समाज सशक्तिकरण लोक स्वराज तथा वैचारिक संतुलनवादी हिंदुत्व की प्रयोगशाला के कार्य में लग जाता है। यही फिल्म समाप्त हो जाती है इस तरह करीब सवा दो घंटे की यह फिल्म अनेक प्रश्न खड़े करती है अनेक प्रश्नों का समाधान खोजती है और समाज के सामने कुछ नई समाधान देती है। इस तरह मैंने चार-पांच दिनों में इस फिल्म के कुछ महत्वपूर्ण अंश आपके सामने प्रस्तुत किये।

परस्पर विरोधी बातों की राजनीति :

मैंने दिल्ली शहर में एक व्यक्ति के दो अलग-अलग चेहरे देखे एक नकाब लगाता है तो कहता है की दिल्ली में बिजली पानी सब मुफ्त मिलना चाहिए मैं अगर रहूंगा तो आपको सब चीज मुफ्त मिलेगी कोई पैसा नहीं देना पड़ेगा जब दूसरा नकाब लगाता है तो कहता है कि दिल्ली के लोगों को पानी कम खर्च करने की जरूरत है हमारे पास पानी इतना उपलब्ध नहीं है कि हम आपको पर्याप्त पानी दे सकते हैं इसलिए पानी की बचत करने के लिए पुलिस का और कानून का सहारा लिया जाएगा। आप लोग एसी के पानी का भी उपयोग करिए जिससे पानी की बचत हो सके बिजली भी बचाइए क्योंकि बिजली की भी कमी हो सकती है। मैं अब तक नहीं समझा की इन दोनों चेहरों के पीछे एक ही व्यक्ति अगर है तो दो तरह की भाषा क्यों बोल रहा है

टूटती नागरिक सुरक्षा और न्याय की आस :

आज के अखबारों में मैंने तीन महत्वपूर्ण समाचार पढे। पहला समाचार यह है की छत्तीसगढ़ में जो गंगस्टर पकड़े गए हैं उनके किसी बॉस ने विदेश से यह धमकी दी है। जिस उद्योगपति ने हमारे साथियों को पकड़वाया है उसकी जान तो खतरे में है ही, हम उसको जिंदा नहीं छोड़ेंगे क्योंकि उसने हम लोगों को चुनौती दी है। उसने धमकी में यह भी लिखा है कि उसका नेटवर्क बहुत बड़ा है और उसके पास सैकड़ो ऐसे हत्यारे मौजूद हैं। दूसरा समाचार यह भी है कि हमारे सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश मदन लोकुर ने यह बयान दिया है कि भारत में संविधान के अनुसार किसी भी अपराधी को सच बताने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता वह स्वेच्छा से चाहे तो बता भी सकता है अन्यथा वह बताने से इनकार भी कर सकता है तीसरा समाचार यह भी है कि भारत के विपक्षी दल भारत की कानून व्यवस्था से उतने अधिक चिंतित नहीं है जितना महंगाई बेरोजगारी शिक्षा और स्वास्थ्य से चिंतित है। वह इन चारों को ज्यादा आवश्यक मान रहे हैं न्याय और सुरक्षा की तुलना में। मैं इन तीनों समाचारों को एक ही अखबार में पढकर इस बात पर गंभीरता से विचार कर रहा हूं की भारत का संविधान गलत है हमारे राजनेता गलत हैं पूरी व्यवस्था गलत है अथवा हम सुरक्षा और न्याय को सर्वोच्च प्राथमिकता बताने वाले गलत हैं। आज देश यहां तक पहुंच चुका है कि हमें इस प्रकार के बड़े-बड़े अपराधियों से सुरक्षा के दिए मदद करना हमारी मजबूरी है। विचार नीय प्रश्न यह है कि हमारा देश कहां चला गया। हमारी राजनीतिक व्यवस्था किस दिशा में जा रही है। हम भारत के लोग इस बात के लिए मजबूर हो गए हैं कि हम अपनी सुरक्षा के लिए अपराधियों को धन दें हम अपराधियों के मौलिक अधिकारों की चिंता करने के लिए न्यायपालिका को धन दें हम बेरोजगारी शिक्षा महंगाई और स्वास्थ्य के विस्तार के लिए सरकार को भरपूर धन दें या हम अपनी सुरक्षा की चिंता करें।

सप्त सिद्धांतों के पतवार के सहारे व्यवस्था परिवर्तन की नाव:

आज चिन्तन करने की जरूरत है कि 'व्यवस्था-परिवर्तन' वर्तमान सामाजिक वातावरण में कहां खड़ा है। हम लोगों ने करीब 70 वर्ष पूर्व व्यवस्था परिवर्तन का प्रयत्न शुरू किया था। हमारे प्रयत्नों का मूल आधार था -

(१) अहिंसा और सत्य, (२) सत्ता का अकेंद्रीकरण, (३) वर्ग समन्वय, (४) श्रम के साथ न्याय, (५) सामाजिक व्यवस्थाओं की पुनर्स्थापना, (६) साम्यवादी अर्थव्यवस्था को समाप्त करके पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का प्रयोग (७) योग्यता को प्रतिस्पर्धा की अधिकतम स्वतंत्रता।

हमारे प्रयत्नों में सबसे बड़ी बाधा था साम्यवादी विचार, साम्यवाद इन सप्त विकार पर केंद्रित था -

(१) हिंसा और असत्य, (२) केंद्रित सत्ता, (३) वर्ग-संघर्ष का अधिकतम उपयोग, (४)चार बुद्धिजीवियों के पक्ष में श्रम-शोषण की नीति, (५) सामाजिक, धार्मिक, पारिवारिक व्यवस्था को तोड़कर राजनीतिक व्यवस्था का सशक्तिकरण, (६) पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के स्थान पर साम्यवादी अर्थव्यवस्था की स्थापना, (७) समानता को अधिक महत्वपूर्ण बनाना और स्वतंत्रता की जगह समानता को आगे लाना।

हम दोनों की विपरीत विचारधाराओं के बीच संघर्ष शुरू हुआ था। इस संघर्ष में साम्यवादियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर मुसलमान, कांग्रेसी तथा धर्म विरोधी एक साथ खड़े थे यह संघर्ष निरंतर चलता रहा। साम्यवाद के साथ मिलकर अन्य सब लोग पूरी ताकत से लगे रहे की हिंसा, असत्य, साम्यवादी अर्थव्यवस्था, अल्पसंख्यक, सांप्रदायिकता को आधार बनाकर नरेंद्र मोदी का विरोध करना है। दूसरी तरफ हम सब लोग मिलकर इस बात का प्रयत्न करते रहे कि हम इस साम्यवादी संस्कृति के खिलाफ नरेंद्र मोदी को आगे लाकर जन-जागरण करते रहेंगे। आमतौर पर मुस्लिम संस्कृति के खिलाफ हिंदू संस्कृति ने एकजुट होकर मोदी का समर्थन किया। मुझे पूरा विश्वास है कि हम लोग व्यवस्था परिवर्तन के बीच इस साम्यवादी बाढ़ को परास्त करने में सफल होंगे। इन संभावनाओं पर और चर्चा हम आज दूसरे सत्र में करेंगे।

हम लोगों ने व्यवस्था परिवर्तन के मार्ग में गांधी विचार को सबसे अधिक नजदीक पाया और नेहरू विचार को सबसे अधिक विरुद्ध। हम लोग 25 वर्ष पहले इस नतीजे पर पहुंचे की लोक-स्वराज्य को सबसे पहले स्थान पर रखना चाहिए। हमारे साथ कई साथी जुड़े उनमें से आचार्य पंकज, ओमप्रकाश दुबे, अभ्युदय द्विवेदी, नरेंद्र सिंह जी, धर्मेंद्र जी राजपूत, प्रेम नाथ जी गुप्ता, रामवीर श्रेष्ठ, ज्ञानेंद्र आर्य आदि अनेक लोग एक साथ बैठकर सोचने लगे लेकिन हम लोगों की दिशा धीरे-धीरे लोक-स्वराज के साथ-साथ वैचारिक संतुलनवादी हिंदुत्व की तरफ भी बढ़ने लगी। हम लोगों के बीच में साम्यवाद के समर्थन और विरोध के नाम पर दो ग्रुप बनने लग गए। मैं, आचार्य पंकज, नरेंद्र सिंह जी, अभ्युदय द्विवेदी, ज्ञानेंद्र आर्य

यह साम्यवाद विरोधी माने जाने लगे, ओमप्रकाश दुबे, धर्मेंद्र राजपूत, प्रेमनाथ जी गुप्ता आदि साम्यवाद समर्थक माने जाने लगे। धीरे-धीरे हम लोगों के साथ जब नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत का जुड़ाव बढ़ा तो हम लोगों के आपस में टकराव और बढ़ा। रामवीर श्रेष्ठ हम लोगों के दोनों के बीच में संतुलन बनाते थे। आज तक हम सब लोग लोक स्वराज के मामले में तो एक साथ हैं लेकिन साम्यवाद के मामले में हम लोगों के विचार अभी तक अलग-अलग है। हम लोगों का ग्रुप इस्लाम और अर्थनीति के मामले में हमेशा भिन्न विचार रखता है और हमारे मित्रों का विचार भिन्न है। हम लोग मोदी समर्थक माने जाते हैं हमारे मित्र मोदी विरोधी माने जाते हैं। लेकिन लोक-स्वराज के मामले में हम सब एक साथ मिलकर काम कर रहे हैं। हम सब लोग व्यवस्था परिवर्तन के मामले में एकजुट हैं। कल के नतीजे यह सिद्ध करेंगे की आगे भविष्य में हम सब लोगों को मिलकर अपनी नीतियों में क्या बदलाव करना चाहिए। हम सभी साथी यह मानते हैं की महंगाई बेरोजगारी गरीबी यह सब बेकार की बातें हैं यह सब प्रोपेगेंडा है और झूठ है। हमारे समाज की वर्तमान में सबसे बड़ी समस्या संगठित इस्लाम है जो कभी भी विश्वसनीय नहीं है। हमारे मित्र मानते हैं कि गरीबी बेरोजगारी भुखमरी महंगाई यह सब बड़ी समस्याएं हैं, इस्लाम को समझाया जा सकता है लेकिन इन समस्याओं का कोई समाधान नहीं दिखता।

भविष्य का आंकलन चुनाव परिणाम के सहारे :

भारत के वर्तमान चुनाव कोई साधारण चुनाव नहीं है, यह दो विचारधाराओं के बीच टकराव है। एक विचारधारा, भारत की सबसे बड़ी समस्या इस्लामिक कट्टरवाद है तो दूसरी विचारधारा है भारत की सबसे बड़ी समस्या महंगाई, बेरोजगारी, गरीबी है। यह दोनों विचारधारा मोदी के समर्थन और मोदी विरोध पर आकर केंद्रित हो गई है। सब लोग अपना अपना अनुमान लगा रहे हैं हम लोग भी अपना अनुमान लगा रहे हैं। हमारी संस्था में भी दोनों तरह के लोग हैं मोदी समर्थक और मोदी विरोधी। मोदी समर्थकों का अनुमान है कि वर्तमान चुनाव में मोदी के पक्ष में 340 से भी ज्यादा सीट आएंगे। मोदी विरोधियों का मानना है की वर्तमान चुनाव में मोदी के समर्थन में 300 से भी काम सीट रहेंगी, लेकिन दोनों पक्ष यह अनुमान अवश्य लगा रहे हैं की सरकार नरेंद्र मोदी की ही बनेगी। हम इस बात का आकलन नहीं कर रहे हैं कि सरकार किसकी बनेगी हमारा तो आकलन यह है कि जनमत हमारे साथ है या हमारे विरोध में। स्पष्ट है यदि नरेंद्र मोदी के पक्ष में 300 से कम सीट आती हैं तो हम अपने को हारा हुआ मानेंगे हम यह अवश्य सोचेंगे कि अब हमें अपनी नीतियों पर फिर से विचार करना चाहिए। यदि नरेंद्र मोदी के पक्ष में 300 से लेकर 340 सीटों तक आती हैं तो हम मानेंगे कि 5 वर्ष बाद भी इसी तरह मोदी पक्ष और विरोध में संघर्ष जारी रहेगा। यही दोनों मुद्दे मुस्लिम सांप्रदायिकता और गरीबी, महंगाई, बेरोजगारी के मुद्दे इसी तरह उठाए

जाएंगे हम लोग भी इसी तरह बंटे रहेंगे। लेकिन यदि नरेंद्र मोदी के पक्ष में 340 से अधिक सीट आ जाती हैं, तो हम यह समझेंगे कि हमारी विचारधारा जीत गई है और मोदी विरोधियों को भविष्य में अपनी नीतियों पर फिर से विचार करना पड़ेगा। स्पष्ट है कि यह चुनाव सिर्फ चुनाव नहीं है बल्कि 70 वर्षों से लगातार चल रहे विचारधाराओं के बीच संघर्ष का आकलन है। कल यह बात साफ हो जाएगी कि भारत की जनता का जनमत किसके पक्ष में है।

मुस्लिम साम्प्रदायिकता को हिन्दू जातिवाद का मिला साथ :

लोकसभा के चुनाव परिणाम आ चुके हैं नरेंद्र मोदी के पक्ष और विपक्ष में यह चुनाव हुआ था इस चुनाव में मुस्लिम सांप्रदायिकता और हिंदुत्व के बीच खुला टकराव हुआ था। चुनाव परिणाम के संबंध में मैंने यह उम्मीद व्यक्त की थी कि यदि नरेंद्र मोदी के समर्थन में 300 से कम सीट आती हैं तो मैं यह मानूंगा कि मुस्लिम सांप्रदायिकता जीत गई है यदि सीट 300 से 340 के बीच रहती है तो मैं यह मानूंगा कि अभी हार जीत का फैसला नहीं हुआ है और यदि सीट 340 से भी अधिक हो जाती हैं तब मैं यह मान लूंगा कि मुस्लिम सांप्रदायिकता भारत में सदा के लिए समाप्त हो गई है। नरेंद्र मोदी के समर्थन में कल सीट 300 से कुछ कम आई है इसलिए मैं यह महसूस करता हूं कि मुस्लिम सांप्रदायिकता जीत गई है। अभी भारत में मुस्लिम सांप्रदायिकता के विरुद्ध उस तरह का वातावरण नहीं बना है जैसी उम्मीद थी। इस चुनाव में यह बात साफ हुई है कि भारत उग्र हिंदुत्व को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है। वर्तमान चुनाव में मुस्लिम सांप्रदायिकता के विरुद्ध उग्र हिंदुत्व हावी हो गया था। जहां भारत का मुसलमान इन चुनाव में शत प्रतिशत एकजुट हुआ वहीं भारत का हिंदू जातिवाद के विभाजन में बंट गया। कहीं ना कहीं उत्तर-प्रदेश, हरियाणा, बिहार और राजस्थान में कुछ राजपूतों ने मोदी विरोध में मुस्लिम सांप्रदायिकता का साथ दे दिया, यह एक गंभीर स्थिति है आगे हम लोग इस बात पर और विचार करेंगे कि जातिवाद के जहर को किस प्रकार कम किया जाए।

वैचारिक संतुलनवादी हिंदुत्व मांग रहा देश :

हम भारत के वर्तमान चुनाव की समीक्षा कर रहे हैं। वर्तमान चुनाव उग्रवादी हिंदुत्व और इस्लाम के बीच में केंद्रित था जहां संघ परिवार सावरकरवादियों के दबाव में उग्र हिंदुत्व की दिशा में चला गया था वही विपक्ष पूरी तरह मुसलमान के साथ खड़ा हो गया था। इस चुनाव के जो परिणाम आए हैं इन परिणामों ने यह सिद्ध किया है कि देश को उग्रवादी हिंदुत्व की जरूरत है ना इस्लाम की जरूरत है बल्कि देश को जरूरत है वैचारिक संतुलनवादी हिंदुत्व की। अब मोहन भागवत या नरेंद्र मोदी चाह कर भी मुसलमान के खिलाफ उग्र कदम नहीं उठा सकेंगे क्योंकि नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू के साथ मिलकर योजनाएं

बनेगी। अब राहुल गांधी खुलकर मुसलमान का साथ नहीं दे सकेंगे क्योंकि राहुल गांधी को भी सिर्फ 100 सीट ही मिल सकी है। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बन गए हैं। इन परिस्थितियों में मैं यह सोचता हूं की वर्तमान चुनाव के परिणाम ठीक दिशा में गए हैं। उग्रवादी सांप्रदायिकता के विरुद्ध भारत की जनता ने वर्तमान जनादेश दिया है। मैं चाहता हूं की संघ परिवार सावरकरवादियों पर अंकुश लगावे भारत को उग्र हिंदुत्व की नहीं भारत को इस्लाम की नहीं भारत को गांधी मार्ग की जरूरत है।

राजनेताओं को योग्य प्रशासक होना चाहिए न की धर्मगुरु :

वर्तमान चुनाव के बाद यह बहस छिड़ गई है कि भारत की जनता ने गलत निर्णय दिया या सही । मेरे विचार से जनता का निर्णय सही मान लेना चाहिए क्योंकि भारत की जनता शासन के रूप में सुरक्षा और न्यायको महत्वपूर्ण मानती है धर्म को नहीं। जनता ने नरेंद्र मोदी को योग्य प्रशासक के रूप में देखकर इतना मज़बूत किया योगी आदित्यनाथ को भी योग्य प्रशासक के रूप में प्रसिद्ध मिली थी लेकिन दुर्भाग्य से कुछ राज्यों में योगी आदित्यनाथ ने अपने को धर्म प्रमुख मानना शुरु कर दिया हिंदुओं का नेता मान लिया। स्थिति यहां तक आई कि कुछ कट्टरपंथी तो योगी आदित्यनाथ में प्रधानमंत्री की छवि देखनी शुरु कर दी जबकि योगी आदित्यनाथ गृह मंत्री की तो योग्यता है प्रधानमंत्री की नही। सच्चाई है कि धर्म का राज व्यवस्था से कोई संबंध नहीं होना चाहिए पिछले दो चार महीनों से धर्म का राज्य से पूरी तरह जुड़ाव हो गया था। यह स्थिति अच्छी नहीं थी। जनता ने जो दिशा दिया है वह समझ कर दिया है। योगी आदित्यनाथ को अपनी दिशा बदल कर एक योग्य प्रशासक तक सीमित कर लेनी चाहिए

भाजपा का सांप्रदायिक विभाजन का मार्ग गलत :

नई सरकार बन चुकी है नरेंद्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बने हैं नरेंद्र मोदी पर भारत की जनता ने अच्छा विश्वास व्यक्त किया है। दूसरी ओर विरोधी पक्ष में कांग्रेस पार्टी भी बहुत मजबूत हुई है यदि हम वर्तमान चुनाव की निष्पक्ष समीक्षा करें तो मुसलमान समाज अपनी एक जुटता सिद्ध करने में सफल हुआ है, साथ-साथ ही हिंदुओं को विभाजित करने में भी मुसलमान समाज आंशिक रूप से सफल हुआ है। यही कारण है कि मुसलमान की पक्षधर पार्टी कांग्रेस बहुत मजबूत होकर सामने आई है। पिछले चुनाव नरेंद्र मोदी ने प्रशासनिक योग्यता के आधार पर लड़े थे उससे मुसलमान में विभाजन हुआ था हिंदुओं में नहीं। इस चुनाव में नरेंद्र मोदी ने हिंदू मुसलमान के आधार पर विभाजन करने की कोशिश की जिसमें मुसलमान पक्ष अपनी मजबूती सिद्ध करने में सफल रहा। मेरे विचार से नरेंद्र मोदी को अपनी पुरानी नीति पर ही चलना चाहिए अर्थात हिंदू मुसलमान का मसला समाज पर छोड़ देना चाहिए, संघ पर छोड़ देना चाहिए, सरकार को प्रशासनिक आधार पर अपनी मजबूती बनाए रखनी चाहिए। वर्तमान चुनाव से नरेंद्र मोदी जी को यह

सीख लेनी चाहिए। किसी अच्छी सरकार का कार्य सांप्रदायिक विभाजन का न होकर प्रशासनिक विभाजन का होना चाहिए।

क्या आपको मेरी नीतियों में कुछ बदलाव दिख रहा है, मैं आपको यह स्पष्ट कर दूं कि मेरी नीतियों में कोई बदलाव नहीं है। मैं बचपन से ही साम्यवाद इस्लाम और नेहरू परिवार के गठजोड़ को समाज के लिए एक घातक गठजोड़ मानता रहा हूं, मैं बचपन से ही इन तीनों का विरोध करता रहा। इन तीनों के गठजोड़ का यदि नरेंद्र मोदी और संघ परिवार मिलकर विरोध करते हैं तो मैं इनका समर्थक हूं और यदि नरेंद्र मोदी और संघ परिवार का आपस में कोई टकराव होता है तो मैं संघ परिवार का समर्थक नहीं हूं नरेंद्र मोदी का समर्थक हूं। पिछले चुनाव में नरेंद्र मोदी ने संघ परिवार को बहुत अधिक महत्व दिया उसका परिणाम अच्छा नहीं हुआ। इसलिए मैंने यह सलाह दिया की साम्यवाद इस्लाम और नेहरू परिवार को कमजोर करने के लिए दोनों मिलजुल कर एक साथ कार्य करें लेकिन यदि संघ परिवार, नरेंद्र मोदी पर वरीयता चाहता है तो यह बहुत घातक होगा। मैं नरेंद्र मोदी का समर्थक हूं और तब तक समर्थक हूं जब तक साम्यवाद इस्लाम और नेहरू परिवार का घातक गठजोड़ कमजोर नहीं हो जाता। यदि नरेंद्र मोदी के अतिरिक्त देश का कोई भी अन्य राजनेता लोक-स्वराज का समर्थन करेगा, तब मैं नरेंद्र मोदी और संघ परिवार को छोड़कर उस राजनीतिक दल का समर्थन करूंगा अन्यथा नहीं।

वर्तमान भारत सरकार नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत मिलकर चला रहे हैं। इस सरकार का पहला नेतृत्व नरेंद्र मोदी कर रहे थे लेकिन पिछले 6 महीने से मोहन भागवत और संघ परिवार को बहुत अधिक महत्व दिया गया। अप्रत्यक्ष रूप से टिकट बंटवारे में भी संघ परिवार अधिक हावी रहा और नीतियों में भी। मैं कई बार लिखता रहा हूं की सांप्रदायिकता को सिर्फ दबाया ही जा सकता है, संतुष्ट नहीं किया जा सकता, चाहे वह सांप्रदायिकता मुसलमान की हो या हिंदुओं की। दुर्भाग्य से हिंदू सांप्रदायिकता को संतुष्ट करने की कोशिश हुई। दुनिया जानती है कि नरेंद्र मोदी एक गंभीर विचारक है। संघ परिवार लाठी चलाना जानता है बल प्रयोग जानता है, लेकिन विचारों से संघ परिवार में कोई गंभीरता नहीं है। हमारी भारतीय संस्कृति यह स्पष्ट करती है कि क्षत्रिय प्रवृत्ति के ऊपर ब्राह्मण प्रवृत्ति का अंकुश होना चाहिए, दुर्भाग्य से वर्तमान चुनाव में क्षत्रिय प्रवृत्ति का संघ परिवार निरंकुश हो गया और उसके कारण हिंदू सांप्रदायिकता के विस्तार का खतरा पैदा हुआ जो नहीं होना चाहिए था। अब मैं इस बात का पक्षधर हूं कि नरेंद्र मोदी जिस लाइन पर चल रहे हैं फिर से उसे लाइन पर चलें और संघ परिवार की मदद ले क्योंकि कट्टरपंथी का कोई धर्म नहीं होता है, कट्टरवादी लोग कब दूसरे गुट के साथ मिल जाएंगे, इसका कोई निश्चित आभास नहीं होता है। इसलिए कट्टरवाद को प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए जो भूल हुई। मेरा अंत में यह सुझाव है कि नरेंद्र मोदी

पहले जिस तरीके से चल रहे थे उस तरीके से ही लगातार आगे बढ़ते रहें। मैं मोहन भागवत जी को भी सलाह दूंगा कि वे हिंदुत्व को इस्लाम की तरह चलने से बचावे। देश संघ परिवार को बर्दाश्त कर लेगा हिंदुत्व का विस्तार कर लेगा सावरकरवाद को स्वीकार नहीं करेगा।

साम्प्रदायिकता, साम्यवाद और नेहरू परिवार का मनोबल बढ़ गया :

यह चुनाव दो गुटों में विभाजित था एक गुट में था नेहरू परिवार, मुसलमान, कम्युनिस्ट दूसरे गुट में थे नरेंद्र मोदी, संघ, भारतीय जनता पार्टी और हिंदू। इस चुनाव में मुसलमान गुट जीत गया और हिंदू हार गया। स्वाभाविक है उनका मनोबल बढ़ा हुआ है और नरेंद्र मोदी के गुट का घटा हुआ है। मैं नरेंद्र मोदी के साथ रहा और मेरा भी मनोबल गिरा है यह बात सही है। चुनाव के पूर्व ही यह बात कही जा रही थी कि यदि नरेंद्र मोदी का गुट कमजोर होगा तो पाकिस्तान प्रसन्न होगा, चीन प्रसन्न होगा, नक्सलवाद प्रसन्न होगा, आतंकवाद खुश होगा। 4 जून के बाद सभी लक्षण साफ दिख रहे हैं। यह बात साफ हो गई है कि 4 जून के बाद लगातार पाकिस्तानी आतंकवादी कश्मीर में घुसपैठ कर रहे हैं। पिछले कई दिनों से लगातार कश्मीर में आतंकवादी गतिविधियां बढ़ी है नक्सलवादी भी कुछ अपने को मजबूत समझ रहे हैं पाकिस्तान को यह विश्वास हो गया है कि अब नरेंद्र मोदी इतने ताकतवर नहीं है कि वह घुस कर मारेंगे। भारत के नेहरू परिवार के पक्षधर एक तरफ पाकिस्तान और चीन पर आक्रमण की बात करेंगे और दूसरी तरफ उन्हीं के कुछ साथी पाकिस्तान और चीन से वार्ता करने का दबाव डालेंगे यह स्वाभाविक है। हम देख रहे हैं कि मेरे एक कम्युनिस्ट मित्र 4 तारीख के पहले जिस तरह का लिखा करते थे आज उनका मनोबल इतना बड़ा है वह बिल्कुल विपरीत दिशा में लिखना शुरू कर दिए हैं क्योंकि वे लोग चुनाव जीत गए हैं और हम लोग चुनाव हार गए हैं। स्वाभाविक है कि उन्हें कटु भाषा बोलने का अधिकार है और उनके कटु भाषा सुनना हमारी मजबूरी है। अगले 5 वर्षों तक इसी तरह का वातावरण चलता रहेगा। 5 वर्षों के बाद चुनाव होगा तब स्पष्ट होगा कि हम लोग मजबूत होते हैं या कमजोर होते हैं । हम चुनाव हारे जरूर हैं लेकिन मनोबल समाप्त नहीं हुआ है। हम अगले चुनाव में नरेंद्र मोदी को फिर से मजबूत करने का प्रयत्न जारी रखेंगे । मैं आपको स्पष्ट कर दूं कि पाकिस्तान, चीन, मुसलमान, साम्यवादी, नेहरू परिवार इस गुट के आगे हम लोग घुटने टेकने के लिए तैयार नहीं है।

यह बात पूरी तरह साफ हो गई है की वर्तमान चुनाव के बाद मुसलमान कम्युनिस्ट और नेहरू परिवार का मनोबल बढ़ा हुआ है विदेशी संस्थाएं भी इस विषय में प्रयत्नशील है ऐसे समय में भारत और हिंदुत्व के लिए विशेष गंभीरता का समय है । इस समय नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत की जोड़ी ही फिर से भारत और हिंदुत्व के गिरे हुए मनोबल को ऊंचा कर सकती है। हम आप सबका कर्तव्य है कि हम नरेंद्र

मोदी मोहन भागवत की गलतियों को किनारे करके इनका मनोबल बढ़ाने का प्रयत्न करें अन्यथा फिर से भारत वही साम्यवाद इस्लाम और नेहरू परिवार के चंगुल में फंस सकता है जिस तरह 70 वर्षों तक फंसा रहा। मैं सावरकरवादियों से विशेष निवेदन करता हूं कि वह साम्यवाद इस्लाम और नेहरू परिवार के चक्कर में ना पड़ें और नरेंद्र मोदी मोहन भागवत की जोड़ी का मनोबल बढ़ावें। नेहरू परिवार का मनोबल बढ़ना देश और हिंदुत्व के लिए खतरनाक है

शोषक वर्ग नहीं बल्कि व्यक्ति होता है :

समाचार है की राजस्थान के एक शहर के डिप्टी कलेक्टर ₹100000 घूस लेते हुए रंगे हाथ गिरफ्तार हुई है। उस डिप्टी कलेक्टर की तीन विशेषताएं हैं एक वह महिला है दूसरा वह दलित है तीसरा वह गरीब है वह दलित कार्यालय में नौकरी करते हुए सफाई का काम करते-करते ही बहुत गरीबी में जीवन यापन की और परीक्षा पास करके एसडीएम बन गई। उसने एक दलित से ही ₹100000 की घुस ली। यह उदाहरण उन लोगों के गाल पर एक तमाचा है जो कहते हैं की गरीब, दलित, महिला वर्ग शोषित है। वास्तव में शोषक व्यक्ति होता है, अपराधी व्यक्ति होता है वर्ग नहीं। जो लोग कहते हैं कि वर्ग अपराधी होता है या वर्ग पिछड़ा और दलित होता है, वे वास्तव में वर्ग-संघर्ष बढ़ाने वाले होते हैं उनका वास्तविकता से कोई लेना-देना नहीं होता। आप विचार करिए की एक महिला, दलित अत्यंत गरीब और पावर मिलते ही इतनी भ्रष्ट तो यह व्यक्ति का स्वभाव है आप जिसे भी पावर देंगे, वह पावर मिलने के बाद भ्रष्टाचार भी कर सकता है और पावर मिलने के बाद ईमानदार भी रह सकता है। यह व्यक्ति के ऊपर निर्भर है जाति पर धर्म पर नहीं इसलिए मेरा यह सुझाव है की किसी वर्ग को किसी पहचान से जोड़ना ठीक नहीं है। समय आ गया है कि हम आप सब मिलकर वर्ग मान्यता को कमजोर करें।

हिन्दू कभी एक जुट नहीं होगा :

मेरे एक मित्र गोयल जी ने लिखा है कि जिस तरह मुसलमान ने एकजुट होकर वोट दिया है उस आधार पर अब हिंदुओं को भी एकजुट होना ही पड़ेगा।

मैं गोयल जी की बात से सहमत नहीं हूं। भारत का हिंदू एकजुट कभी हो ही नहीं सकता क्योंकि हिंदू धर्म के आधार पर इकट्ठा होता ही नहीं है। इस्लाम धर्म के आधार पर इकट्ठा हो सकता है हिंदू जाति के आधार पर तो इकट्ठा हो सकता है लेकिन धर्म के आधार पर नहीं। इसलिए मुसलमान साम्यवाद और नेहरू परिवार हिंदुओं को जाति के आधार पर विभाजित करते हैं और इसमें वह सफल हो जाते हैं। इसलिए मेरा यह सुझाव है कि हिंदुओं को एकजुट करने की कोई भी कोशिश सफल हो ही नहीं सकती और उसे छोड़ दिया जाए। अब तो हमारे पास तरीका यही है कि नेहरू परिवार, मुसलमान, साम्यवादी, गांधीवादी,

बौद्ध, सिख इन सब में से कुछ लोगों को विभाजित किया जाए। जब तक इस गठबंधन में विभाजन नहीं होगा तब तक चुनाव में आप कमजोर पड़ते रहेंगे। इसलिए सोच समझकर इनमें विभाजन की कोशिश करिए। मेरी यह सलाह यद्यपि कट्टरपंथी हिंदुओं को अच्छी नहीं लगेगी लेकिन इस चुनाव के अनुभव ने यह सिद्ध कर दिया है कि हिंदू एकजुट के प्रयास का कोई परिणाम अब नहीं निकलने वाला है। अब तो मुस्लिम एक जुटता में विभाजन ही कोई परिणाम दे सकता है।

राज्य और समाज दोनों की भूमिका अलग हैं :

दुनिया में एक गलतफहमी फैला दी गई है कि राज्य और समाज एक ही होता है यह बात पूरी तरह गलत है राज्य अलग होता है और समाज अलग होता है। राजनेताओं ने दुनिया में यह झूठ फैलाया है। सच बात यह है कि यही झूठ भारत में भी फैल गया है। भारत में भी सरकार अपने को समाज मानने लगी है। सरकार की भूमिका सिर्फ यह होती है कि वह 140 करोड़ व्यक्तियों के बीच रेफरी का काम करें, यदि 140 करोड लोग आपस में कंपटीशन कर रहे हैं तो उनके स्वतंत्र कंपटीशन में राज्य को कोई हस्तक्षेप नहीं तब तक नहीं करना चाहिए, जब तक उसे कंपटीशन में कोई व्यक्ति गलत ना करे। राज्य का काम इस स्वतंत्रता स्पर्धा में किसी कमजोर की मदद करना नहीं है क्योंकि वह तो रेफरी है, निर्णायक है, निर्णायक किसी की मदद कैसे कर सकता है। निर्णायक तो सिर्फ किसी अपराधी को रोक ही सकता है इसके अतिरिक्त राज्य की कोई भूमिका नहीं होती है। कमजोर की मदद करना समाज का काम है। दुर्भाग्य से राजनेताओं ने कमजोरों की मदद करने की जिम्मेवारी भी अपने ऊपर ले ली है, जो उसका काम नहीं है। मैं यह बात साफ कर देना चाहता हूं कि राज्य की भूमिका रेफरी से अधिक कुछ नहीं होती है।

मुफ्त बांटी जा रही वास्तु का दुरूपयोग होगा ही :

पूरी दिल्ली में पानी के लिए हाहाकार मचा हुआ है, पानी की अव्यवस्था, दिल्ली के लिए सबसे बड़ी समस्या बन गई है। इसी तरह रेल विभाग का भी हाल है, रेलवे में भी बड़ी मात्रा में ट्रेन रद्द की जा रही है, रेलवे समय पर नहीं चल रही है। हम देख रहे हैं की मोबाइल के मामले में भी बहुत अव्यवस्था हो गई है, कोई भी फोन कॉल एक बार में तो रिसीव होती ही नहीं है। इस तरह की अव्यवस्था सिर्फ इन तीन विभागों में ही नहीं अन्य कई जगह देखने को मिल रही है, इसका मुख्य कारण यह है कि हमारी सरकारों ने जनहित को छोड़कर जन-प्रिय आवाज उठानी शुरू कर दी। हमारे अरविंद केजरीवाल ने मुफ्त बांटने का जो नारा दिया था, उनको यह समझ में नहीं आया कि इसका परिणाम क्या होगा? यदि मुफ्त पानी दिया जाएगा तो उसका दुरुपयोग भी होगा ही, आज दिल्ली सरकार पानी खरीदने की स्थिति में नहीं है। अगर रेलों का किराया नहीं बढ़ाया जाएगा तो रेलवे घाटे में चलेंगी और अव्यवस्था होगी। टेलीफोन का बिल

पता नहीं कितने वर्षों से नहीं बढ़ा है, स्वाभाविक है की अव्यवस्था होगी ही, ऐसी अव्यवस्था अन्य विभागों में भी दिख सकती है। इसका समाधान सिर्फ यही है कि आप हर सेवा का मूल्य प्रतिवर्ष मुद्रा स्थिति के आधार पर अपने आप बढ़ जाने दीजिए। चाहे शिक्षा हो, रेल हो, डीजल पेट्रोल हो, या पानी हो, सबका मूल्य अगर 5 या 7 % प्रतिवर्ष बढ़ा दिया जाए तो अव्यवस्था का रोना नहीं रहेगा, राजनीतिक दुकानदारी बंद हो जाएगी। मैं विशेष कर अरविंद केजरीवाल और इंडी गठबंधन के मुखिया राहुल गांधी से निवेदन करता हूं कि यह मुफ्त बांटने की आदत छोड़िए अन्यथा जल संकट ही नहीं, देश में अनेक प्रकार का संकट पैदा हो जाएगा।

इंडी गठबंधन प्रमुख राहुल गाँधी जनमत के बाद भी चुप क्यों? :

यह बात बिल्कुल साफ हो गई है की वर्तमान भारत ने राहुल गांधी को एक नेता के रूप में स्वीकृति दे दी है। राहुल गांधी के नेतृत्व में 232 लोकसभा क्षेत्र से चुनाव जीतना, कोई साधारण बात नहीं है। अब राहुल गांधी देश की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाएंगे और उन्हें उत्तरदाई भी होना होगा। यह बात स्पष्ट हो गई है की साम्यवादी, मुस्लिम, नेहरू परिवार का गठजोड़ भारत में महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में सामने आया है, और अब उसका कुछ प्रभाव भी दिखने लगा है। कुछ दिन पूर्व ही बंगाल में जिस तरह विपक्षी नेताओं पर आक्रमण हुए, वे अभूतपूर्व थे। जिस तरह रतलाम में चार मुसलमान ने मिलकर योजना पूर्वक मंदिर में गाय का कटा हुआ सर ले जाकर फेंक दिया, यह घटना भी साधारण नहीं है। जिस तरह दक्षिण भारत में एक बकरे पर राम लिखकर उसे काटने की योजना बनाई गई, यह घटना भी महत्वपूर्ण है। स्वाभाविक है कि देश में सांप्रदायिक मुसलमान का मनोबल बढ़ रहा है। इन सभी घटनाओं का उत्तर राहुल गांधी को देना चाहिए कि उनकी इन तीनों घटनाओं में क्या प्रतिक्रिया है। अभी तक राहुल गांधी या नेहरू परिवार के किसी समर्थक में इन तीनों घटनाओं की निंदा नहीं की है, अब राहुल गांधी को उत्तरदाई होना पड़ेगा। राहुल गांधी को इस बात का भी उत्तर देना चाहिए कि यदि कोई हिंदू भी इसी प्रकार किसी पशु पर मोहम्मद का नाम लिखकर उस पशु को पीट रहा हो तो राहुल गांधी इस संबंध में चुप रहेंगे या बोलेंगे।

कई दिनों से दिल्ली में पानी के लिए हाहाकार मचा हुआ है, पूरी दिल्ली परेशान हो गई है, लोगों को पीने तक के लिए पानी का संकट है। राहुल गांधी दिल्ली में ही है लेकिन राहुल गांधी को दिल्ली में पानी का संकट दिखाई नहीं दे रहा है, जबकि दिल्ली में इंडी गठबंधन की ही सरकार काम कर रही है। मुझे आश्चर्य है कि राहुल गांधी को दिल्ली के पानी का संकट क्यों नहीं दिख रहा है, राहुल गांधी को इस बात का जवाब देना चाहिए कि दिल्ली में पानी का संकट कैसे दूर होगा।

भारतीय चुनाव और अंतर्राष्ट्रीय सन्दर्भ :

मेरे मित्र जयदेव आर्य ने एक लेख लिखकर व्हाट्सएप पर भेजा है। उस लेख के अनुसार, नरेंद्र मोदी पर सारी दुनिया के कुछ प्रमुख लोगों ने मिलकर अचूक ब्रह्मास्त्र का आक्रमण किया था। यह चुनाव भारत तक ही सीमित नहीं था, बल्कि दुनिया के बड़े-बड़े देशों के जो लोग नरेंद्र मोदी से भय खा रहे थे, उन सब ने भी यह चुनाव लड़ा है। यहां तक कि इजरायल के बड़े उद्योगपति सोरोस ने तो प्रत्यक्ष रूप से भूमिका अदा की ही। कनाडा के भी कुछ लोगों ने पंजाब में बहुत दखल दिया। चीन ने अपने भारतीय एजेंटों को भरपूर उकसाया, दुनिया के किसी भी देश ने नरेंद्र मोदी के पक्ष में आवाज नहीं उठाई क्योंकि दुनिया के लोग नरेंद्र मोदी को एक खतरनाक नेता मान रहे थे लेकिन पता नहीं किस दैव शक्ति के प्रभाव से नरेंद्र मोदी इतने गंभीर आक्रमण से भी बच गए।

मैंने इस दृष्टिकोण से विचार किया मुझे भी यह बात सच लगी की दुनिया का कोई भी देश नरेंद्र मोदी को पसंद नहीं कर रहा है। मजबूरी ही है कि वह नरेंद्र मोदी के साथ मित्रता कर रहा है। यह चुनाव इस दृष्टि से अगर देखा जाए तो नरेंद्र मोदी बहुत बड़े खतरे से बच गए हैं।

इस बार के चुनाव में किसी चमत्कारिक शक्ति के प्रभाव से मोदी जी बच गए, यह संतोष की बात है लेकिन भविष्य के लिए गंभीरता से सोचना पड़ेगा। हम उग्रवाद के सहारे देश को दुनिया में आगे नहीं ले जा सकते। हमें तो 'वैचारिक संतुलनवादी हिंदुत्व' को आगे रखकर ही दुनिया के सामने आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। यदि हिंदुत्व को इस्लाम की तरह उग्रवादी दिशा दी गई तो हम दुनिया को दोष देकर भी अपने को बचा नहीं सकेंगे, इसलिए हम सब फिर से विचार करें कि क्या हमें 'उग्रवादी हिंदुत्व' चाहिए या 'वैचारिक संतुलनवादी हिंदुत्व' चाहिए। मैं तो इस पक्ष का हूं कि नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत 6 महीने पहले जिस दिशा में चल रहे थे, वह दिशा अधिक अच्छी थी बाद में हम लोगों ने दिशा बदलकर उग्रवादी हिंदुत्व की राह पकड़ी, उसने दुनिया को हमारे खिलाफ एकजुट कर दिया। मेरा यह सुझाव है की हम सावरकरवादी हिंदुत्व की तुलना में गांधीवादी हिंदुत्व का मार्ग पकड़े। जो मुसलमान अच्छे हैं, शरीफ हैं, उन्हें साथ रखने में कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। सारे मुसलमान बुरे होते हैं और सारे हिंदू अच्छे होते हैं, यह धारणा ठीक नहीं है। यदि सभी शरीफ लोगों को एकजुट कर दिया जाए तो वह आदर्श स्थिति होगी। मेरे विचार से हिंदू राष्ट्र की आवाज नहीं 'समान नागरिक संहिता' की आवाज आगे होनी चाहिए। हमें यह मान लेना चाहिए कि नरेंद्र मोदी, मोहन भागवत मिलकर जो भी मार्ग निकलेंगे वह ठीक है।

यह बात साफ दिख रही थी की चुनाव के बाद नरेंद्र मोदी की कार्य करने की गति बहुत कम हो गई थी लेकिन 15 दिनों में ही, वह फिर से अपने फार्म में आने लगे हैं, फिर से वह सक्रिय हो गए हैं। इसका

यह प्रमाण है कि 2 दिन पहले ही पाकिस्तान में भारत का एक बहुत बड़ा खूंखार अपराधी अपने आप मारा गया। अवश्य ही कोई ईश्वरीय शक्ति होगी। चार लोग मोटरसाइकिल से आते हैं और घेर कर हमजा को मार कर चुपचाप चले जाते हैं, पाकिस्तान की सरकार खोज नहीं पाती। यह कोई पहला मामला नहीं है, इस चुनाव के पहले तो पाकिस्तान में ऐसे कई आतंकवादी मारे गए हैं, जिन्हें पाकिस्तान की सरकार खोज नहीं सकी। चुनाव के बाद यदि नरेंद्र मोदी का प्रभाव इतना काम कर रहा है तो इसके लिए मोदी जी धन्यवाद के पात्र हैं। स्पष्ट है कि पाकिस्तान की सरकार ने भी नरेंद्र मोदी को हराने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी थी।

नयी वैश्विक सामाजिक व्यवस्था की रचना का आधार :

मैं और मेरे साथी दो दिशाओं में एक साथ कार्य कर रहे हैं, हम राजनीतिक स्तर पर नरेंद्र मोदी को अपना नेता मानते हैं। सामाजिक स्तर पर हम मार्गदर्शकों की टीम को अपना नेता मान रहे हैं। हमारा यह मानना है कि समाज व्यवस्था कमजोर होती जा रही है और उस कमजोरी का मुख्य कारण समाज में जन्म अनुसार वर्ण व्यवस्था है और उस वर्ण व्यवस्था में भी ब्राह्मणों के अभाव ने सबसे अधिक नुकसान पहुंचाया है। इसलिए हम लोग विश्व में एक नई सामाजिक व्यवस्था स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे हैं। इसकी शुरुआत भारत से हो रही है और भारत में भी मार्गदर्शक सामाजिक शोध संस्थान इसकी शुरुआत कर रहा है। हम गंभीर विचारकों की एक टीम तैयार कर रहे हैं, जो वर्तमान जन्म अनुसार वर्ण व्यवस्था का स्थान ले ले और राजनीतिक आर्थिक तथा अन्य व्यवस्थाओं का मार्गदर्शन करें। इस कार्य की शुरुआत पिछले 6 महीने से हुई है और हम लगातार इस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, प्रतिदिन शाम को 8:00 से 9:00 तक हम सब ज़ूम पर इकट्ठे होकर एक समझदारी विस्तार विचार-मंथन करते हैं। हमें विश्वास है कि हम इस दिशा में सफल होंगे, आप भी चाहे तो इस समाज सशक्तिकरण की लाइन पर जूम में जुड़ सकते हैं।

ज़ूम चर्चा कार्यक्रम से :

१. चर्चा का विषय था कि संविधान ने व्यक्ति के गैरकानूनी और असामाजिक कार्य को भी अपराध मान लिया है। इसका समाज पर बहुत बुरा असर हुआ है और एक ग़लत संदेश गया है। आज समाज में शायद ही कोई व्यक्ति होगा जो जाने-अनजाने गैरकानूनी और असामाजिक कार्य नहीं करते होंगे। व्यक्ति के स्वाभाविक अथवा प्रवृत्तिगत कार्य को भी अपराध घोषित कर देना एक बड़ी भूल थी। इसका समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा। परिणाम हुआ कि सभी व्यक्ति अपराध भाव से अथवा कहें कि हीन भावना से ग्रसित हो गए। लोगों का मनोबल टूटने गया। जब किसी व्यक्ति का मनोबल टूट जाता है तो इसका असर उनके

व्यक्तिगत जीवन पर पड़ता है। समाज की परिस्थितियां बताती हैं कि हर व्यक्ति अपराध भाव से पीड़ित होने की वजह से अब दूसरे का मुखापेक्षी हो गया है। उन्हें जो समझाया जाता है वही समझने को तैयार होते हैं। आत्मनिर्णय की उनकी शक्ति धूमिल पड़ गई है। हमारे साथी ज्ञानेंद्र भाई ने भी इस प्रश्न को उठाया। उन्होंने कहा कि जब किसी व्यक्ति अथवा समाज को गुलाम बनाना होता है तो सबसे पहले उसका मनोबल तोड़ा जाता है। आजादी के बाद से ही राजनेताओं की लगातार कोशिश रही है कि निर्णय के अधिकार उनके पास हो, समाज सिर्फ उनके बने कानून से संचालित होने चाहिए। जबकि वास्तविकता कुछ और ही है। हकीकत में समाज सर्वोच्च होता है, समाज असली मालिक होता है और तंत्र मैनेजर। निर्णय का अधिकार, संविधान निर्माण का पूरा अधिकार समाज के पास है। आज समाज इन राजनेताओं के द्वारा बनाए गए कानून के अनुसार चलने को बाध्य कर दिया गया है क्योंकि इन्हें खुद ही समझ नहीं है कि अपराध क्या होता है और नैतिक क्या होता है अथवा असामाजिक कार्य किसे कहा जाता है। इसे जाने समझे बिना इन्होंने अपराध की परिभाषा तय कर दी और उसके साथ असामाजिक कार्य और गैर कानूनी कार्य को भी जोड़ दिया। फलत: सभी व्यक्ति कानून के नजर में अपराधी हो चुके हैं। चर्चा कार्यक्रम में राकेश कुमार जी, सुनील शास्त्री जी, अभ्युदय द्विवेदी जी आदि ने भी अपने-अपने विचार रखें। कार्यक्रम में मुनि जी ने सभी साथियों के प्रश्न का उत्तर दिया और उनकी शंकाओं का समाधान किया।

२. रात्रि नियत समय 8:00 बजे से चर्चा कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। आज हमारी चर्चा का विषय था कि "संविधान भारत में अच्छे लोगों की सुरक्षा और बुरे लोगों पर अंकुश लगाने के स्थान पर अच्छे लोगों पर अंकुश और बुरे लोगों को उच्छृंखल होने के अवसर पैदा कर रहा है"। चर्चा की शुरुआत ही संविधान निर्माण से लेकर पूर्ण होने तक की गई गलतियां को सामने रखते हुए की गई। क्योंकि आजादी से पहले देश ने हमेशा गुलामी को झेला था अतः हमारे पास किसी भी प्रकार का व्यवस्था को चलाने के लिए कोई सर्व स्वीकृत संविधान नहीं था। जब आजादी मिलने की सुगबुगाहट होने लगी तो अंग्रेजों ने भारतीय नेताओं से संविधान निर्माण की बात की। चूंकि हमारे नेता भी कई खेमे में बंटे हुए थे, अतः उन्होंने दुनिया के विभिन्न देशों के संविधान से कुछ न कुछ उधार लिया और सबको मिलाकर भारतीय संविधान के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया। आज हम इसी संवैधानिक व्यवस्था के तहत चल रहे हैं। समाज को तोड़ देने वाली, विभाजित करने वाली समूह को तो संविधान में मान्यता मिल गई लेकिन व्यवस्था की उन इकाइयों को मान्यता नहीं दी गई, जिससे वास्तविक समाज संचालित होता है। धर्म, जाति, भाषा, संप्रदाय, लिंग आदि विभेदकारी तत्वों को संविधान से मान्यता प्राप्त हुई लेकिन व्यवस्था की इकाई परिवार, ग्राम आदि को

संवैधानिक दर्जा नहीं मिला। इस संवैधानिक व्यवस्था ने ना सिर्फ राज्य को असीमित अधिकार दिए, बल्कि समाज की सारी शक्ति को भी उनके हाथ सुपुर्द कर दिया। जिसका परिणाम हुआ कि जो निर्णय परिवार को करना चाहिए, जो गांव को करना चाहिए, वह सारे निर्णय सरकार के होने लगे और उन्होंने अपनी राजनीतिक शक्ति का भरपूर दुरुपयोग किया। सत्ता प्राप्ति के लिए विभिन्न समूहों से गठजोड़ करके अपनी शक्ति असीमित कर ली। पूंजीपतियों से, बुद्धिजीवियों से उनका सांठगांठ उनकी शक्ति में अपार वृद्धि करने लगी। नेताओं ने अपराधी तत्वों से भी अपना साठ गांठ बढ़ाया और उन्हें शासन में भागीदारी दी। सरकार की तुष्टिकरण की नीति ने भी एक पक्ष को मजबूत किया तो दूसरे पक्ष को कमजोर किया। हजारों साल से जो जातिवाचक सर्वोच्चता चली आ रही थी, उसकी सुरक्षा के लिए उन्होंने कमजोर वर्गो के बुद्धिजीवियों को आरक्षण के बहाने अपने साथ मिला लिया और श्रमिकों के शोषण को एक हथियार बनाकर वर्ग-निर्माण और वर्ग-संघर्ष का नया रूप समाज के सामने खड़ा कर दिया। राज्य की जनकल्याणकारी अवधारणा ने भी लोगों को अधिकार की जगह सुविधा देने को प्राथमिकता दी और जन साधारण अपने अधिकारों को भूलकर सुविधाओं को ही अधिकार समझने लगे। इस तरह एक भ्रम की स्थिति पैदा हो गई कि जनता के वास्तविक अधिकार क्या है और इन सुविधाओं के माध्यम से हमें आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है या सरकारी रहमो-करम पर हम निर्भर हो जा रहे हैं।

एक घंटे तक चले कार्यक्रम में हम 16 साथियों ने भाग लिया। कुछ साथियों ने अपने विचार रखे और बृजेश राय जी, राकेश कुमार जी ने प्रश्न भी पूछे जिनका उत्तर उन्हें इस कार्यक्रम में बजरंग मुनि जी ने दिया। चर्चा के अंत में मुनि जी ने बताया कि आज समाज की जो दुर्दशा है, वह तंत्र की अति सक्रियता की वजह से है और कुछ मामलों में तंत्र की निष्क्रियता की वजह से। जहां तंत्र को न्याय और सुरक्षा के मामले में सक्रिय होना चाहिए, वहीं वह अपने उत्तरदायित्व से हटकर जनकल्याणकारी अवधारणा को बल प्रदान करने में लगा हुआ है। जिस काम के लिए समाज जिम्मेदार है उसे काम को समाज के लिए छोड़ देना चाहिए, लेकिन सरकार अपनी लोकप्रियता हासिल करने के लिए न सिर्फ राजनीतिक कार्य को बल्कि सामाजिक कार्य को भी अपने निर्देशन में संचालित करता है। वह ऐसे ऐसे कानून बनाता है, जिनकी कोई उपयोगिता भी नहीं होती है। सरकारी अमले नेताओं के ताम-धाम एवं असामाजिक कार्यों को रोकने में ही खप जाते हैं, जबकि अपराधियों को बढ़ावा मिलते रहता है। न्याय व्यवस्था भी ऐसी है संदिग्ध और अपराधी में अंतर न कर पता है, जिसकी वजह से संदेह का लाभ उठाकर वास्तविक अपराधी छूट जाते हैं। न्याय व्यवस्था में देरी भी पीड़ितों के साथ एक अपराध ही है। इस सब का दुष्परिणाम है कि आज समाज में अच्छे लोग आतंकित हैं और बुरे लोग निडर।

क्रमशः

जीवन पथ

वह कैसे? विषय को अपने अनुसार पूर्णतया स्पष्ट करो विवेक!

मैं आपके सामने अपने अनुसार क्या दृष्टिकोण प्रस्तुत कर सकता हूँ सर! हाँ आपके आदेशानुसार मैं अपनी तरफ से यह कहना चाहुँगा कि इस आधुनिक काल में समाज में धर्म के दो रूप प्रकट हैं। जिनमें मूल स्वरूप व्यक्ति के गुण, कर्म, स्वभाव को परिभाषित करता है तथा दूसरा अर्थात कृत्रिम स्वरूप व्यक्ति की संगठनात्मक पहचान की पुष्टि करता है। व्यक्ति की श्रृद्धा का विकृत रूप इस दूसरे स्वरूप का विस्तार करता है। यह विचार (तर्क) और न्याय के विरूद्ध होता है। क्योंकि इसका उद्देश्य संख्या विस्तार और अपने अनुयाईयों के संगठन की सुदृढता पर आधारित होता है। धर्म के इस रूप से दर्शन का कोई सम्बन्ध नहीं होता है बल्कि इनमें भारी अन्तरविरोध होता है। क्योंकि संगठन विचार का भक्षक होता है। धर्म के संगठनात्मक रूप का सबसे बडा दोष यह होता है कि समाज की मूल परिभाषा को ध्वस्त करके यह समाज को व्यक्तियों के समूह से सम्प्रदायों तथा जातियों के समूहों का संग्रहकर्ता सिद्ध कर देता है।

क्या देश में नई व्यवस्था की स्थापना करने वाले लोगों को यह नहीं सोचना चाहिए था कि तथाकथित धर्म के संगठनात्मक स्वरूप को निरपेक्षता की छदम वेशभूषा पहनाकर, उसे संवैधानिक मान्यता देकर, धर्म के प्राकृतिक रूप को ध्वस्त कर रहे हैं। धर्म, राज्य से विधिक मान्यता प्राप्त करने वाला विषय नहीं होता है। यह जीवन में परिस्थिति के अनुसार अपनी आकृति धारण करता है। दुनिया की सामाजिक व राजनीतिक व्यवस्थाओं ने धर्म के मूल स्वभाव को त्यागकर सम्प्रदायों को धर्म के रूप में स्वीकार कर लिया है। यह इन व्यवस्थाओं का नीतिगत दोष है। क्योंकि धर्म की दृष्टि से सम्प्रदाय या पन्थ का शाब्दिक अर्थ ही समाज के प्राकृतिक संगठन के विभाजन का मार्ग प्रशस्त कर देता है। इस क्रिया की प्रतिक्रिया स्वरूप वर्ग विद्वेष के उत्पन्न होने को कोई नहीं रोक सकता है।

क्या तुम पन्थ और धर्म को एक ही विषय-वस्तु के दो नाम के रूप में स्वीकार नहीं करते हो? .... एक अन्य छात्र उससे प्रश्न करता है।

नहीं!...वह विषय का स्पष्टीकरण करते हुए आगे कहता है-क्योंकि पन्थ या साम्प्रदायिक धर्म किसी वस्तुनिष्ठ दर्शन की व्याख्या नहीं करते हैं बल्कि विचार को 'वाद' में समेट देते हैं और वाद शब्द का सबसे बड़ा दोष यह होता है कि वह स्वयं को ही दर्शन का प्रणेता मानने लगता है। यह परिस्थिति बहुत दोषपूर्ण है। क्योंकि इसी विचार ने धर्म को संगठन के रूप में परिवर्तित किया है।...मूलतः पन्थ और धर्म में गम्भीर गुणात्मक अन्तर-विरोध होता है। पन्थ की आकृति निश्चित होती है। इसके लिए यथार्थ और विचार का कोई महत्व नहीं होता है। जबकि धर्म की कोई निश्चित आकृति अथवा विषय-वस्तु नहीं होती है बल्कि यह तो

वस्तुस्थिति की परिस्थिति के अनुसार अपनी आकृति धारण करता है। क्योंकि इसका उद्देश्य जीवन में सन्तुलन की स्थापना के लिए विषय-वस्तु का परिस्थिति जन्य मार्गदर्शन करना होता है।

तो क्या तुम्हारे स्पष्टीकरण का यह आशय है कि हमारे संविधान में जो पन्थ को विधिक स्वतन्त्रता प्रदान की गयी है और पन्थ (सम्प्रदाय) का समन्वय धर्म के रूप में करके धर्म के मूल स्वभाव को विकृत किया गया है!....एक अन्य छात्र उससे अपने संशय का निस्तारण चाहता है।

हाँ! यह बिल्कुल ठीक है।

क्या समाज इस तथ्य को कभी स्वीकार कर सकेगा? ...वह पुनः प्रश्न करता है।

समाज तो इस विषय को स्वीकार कर लेगा लेकिन वह समाज व्यक्तियों का समूह होना चाहिए न कि वर्ग, संगठन, पन्थ, जाति, क्षेत्रवाद तथा अन्य प्रकार की विभाजनकारी संस्कृति स्वीकार करने वाले उपक्रमों का समूह होना चाहिए।

लेकिन कौन अपनी व्यक्तिगत अवधारणाओं को त्यागना चाहेगा विवेक?

ऐसा करने की आवश्यकता नहीं है! आप केवल समाज के कार्य समाज को करने दीजिए, उनमें राज्यगत व्यवस्था का दखल नहीं होना चाहिए। व्यक्ति के लिए पूजा पद्धति, जातीय संस्कार, संगठनात्मक पहचान सिद्ध करने वाले सभी उपक्रम व्यवस्था के ढाँचे में इस कथन के द्वारा संरक्षित न हों कि व्यक्ति को पन्थ से सम्बन्धित कोई भी अनुष्ठान करने की स्वतन्त्रता होगी, क्योंकि यही कथन सम्प्रदायवाद को विधिक संरक्षण प्रदान करता है। समाज में कोई व्यक्ति अपनी आन्तरिक व्यवस्था में कोई भी अनुष्ठान करता है तो करे लेकिन कोई भी पन्थ, जाति, समुदाय या वर्ग यदि समाज की सार्वजनिक मर्यादा को भंग करता है या कोई एक वर्ग दूसरे के वैसे ही अधिकार का अतिक्रमण करता है तो राज्य, समाज में न्याय स्थापित करने का उपक्रम अवश्य पूरा करेगा। पन्थ की स्वतन्त्रता को विधिक स्वतन्त्रता प्रदान करने की आवश्यकता नहीं होती है और न ऐसा करना नीति संगत होता है।

क्या धर्म के बारे में यह स्थिति नहीं है? ... वह पुनः प्रश्न करता है।

इसमें अन्तर होता है! यदि धर्म के अर्थ पर विचार करें तो धर्म की कोई निश्चित आकृति कभी नहीं हो सकती है। यह पदार्थ के चरित्र का नियामक नहीं होता है, लेकिन उसके आचरण का मार्गदर्शन करता है। इसका कोई निश्चित प्रवर्तक नहीं होता है।

लेकिन विवेक हमारा संविधान, पन्थ की वैसी ही धारणा स्थापित करता है जैसी की कल्पना तुमने प्रस्तुत की है!.... उससे अन्य प्रश्न होता है।

और मेरा उत्तर यही है कि संविधान ऐसा करके भी गलत करता है, क्योंकि संविधान की इस अवधारणा के अन्तर्गत राज्य, समाज के अधिकारों का अतिक्रमण करता है। लोकतन्त्र में राज्य, व्यवस्था के ढाँचे की स्थापना नहीं करता बल्कि यह समाज का कार्य होता है। राज्य का कार्य समाज के द्वारा स्थापित की गयी

व्यवस्था का कार्यान्वयन मात्र होता है। मैं पुनः कहता हूँ कि पन्थ के स्वरूप को कतई भी संवैधानिक संरक्षण प्राप्त नहीं होना चाहिए कि उसकी स्वतन्त्रता का स्तर क्या होगा? यह समाज का कार्य है। व्यवस्था (राज्य) का दायित्व अतिक्रमण को रोकना है। लेकिन अतिक्रमण को रोकने का अधिकार उसे समाज की स्वतन्त्रता का अतिक्रमण करने का अधिकार नहीं देता है।

लेकिन सर, यह सब कैसे हो सकेगा? विवेक क्या कह रहा है? क्या समाज इसे कभी स्वीकार कर सकेगा? आप इस बारे में क्या कहेंगे?...इस बार वह छात्र प्रोफेसर श्रीवास्तव से पूछता है। उसके प्रश्न में स्पष्ट झल्लाहट होती है।

भावी भारत का संविधान सहयोग राशि ₹50	वर्तमान संविधान की खामियों एवं उसके निराकरण का सुंदर विश्लेषण करती, देशभर के तमाम विद्वानों एवं बुद्धिजीवियों के साथ निरंतर 20 वर्षों तक शोध के उपरांत लिखी इस पुस्तक की लोकप्रियता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि अब तक तीन बार इसे अलग–अलग संस्थानों के द्वारा छपवाया जा चुका है।
मुनि मंथन निष्कर्ष सहयोग राशि ₹50	श्रद्धेय मुनि जी के 70 वर्षों तक देशभर के मूर्धन्य विद्वानों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ निरंतर 'विचार मंथन' के निष्कर्षों को सूत्र रूप में समेटे, इस पुस्तक को तैयार होने के बाद भी 4 वर्षों तक इसमें संकलित सिद्धांतों पर देशव्यापी विमर्श के उपरांत यह पुस्तक आपके सामने आ पाई है।
मौलिक व्यवस्था का विचार सहयोग राशि ₹50	यह पुस्तक 'व्यवस्था' पर तमाम वैश्विक संदर्भों के आधार पर गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। समाज के प्रत्येक इकाई के स्वतंत्रता सुरक्षा के साथ पोषण की गारंटी पर एक रिसर्च मॉडल के रूप में है यह पुस्तक है।
बस अब बहुत हो चुका सहयोग राशि ₹50	व्यवस्था की खामियों एवं उसके समाधान के लिए आवश्यक प्रभावी विचार एवं उद्दीपक ऊर्जा को अपने में समेटे इस पुस्तक को लिखा है अशोक गाडिया जी ने। यह पुस्तक 'व्यवस्था परिवर्तन' के वैचारिक पृष्ठभूमि को तैयार करती है।
मुनि मंथन सहयोग राशि ₹10	श्रद्धेय मुनि जी के विचारों को गागर में सागर सा अपने में समेटे सीधे सरल समझ में आने वाली शैली में लिखी यह पुस्तक, एक रंगकर्मी निर्देशक निर्माता एवं लेखक आनंद गुप्ता जी की रचना है। शराफत से समझदारी की ओर जाने वाले मार्ग का पथ प्रदर्शक के रूप में या पुस्तक पठनीय है।
रामानुजगंज एक आवाज सहयोग राशि ₹10	अपने में श्रद्धेय बजरंग मुनि जी के जीवन की झलक समेटे इस पुस्तक को श्री नरेंद्र जी ने नाटक की शैली में लिखा है। सामाजिक समस्याओं एवं उसके निराकरण पर पात्रों के माध्यम से यथार्थ को नए रंग रोगन में प्रस्तुत करती है यह पुस्तक।
एक ही रास्ता सहयोग राशि ₹10	नुक्कड़ नाटक गीत संगीत जैसे सांस्कृतिक विधाओं से लोगों को समझदार बनने की प्रेरणा देने के लिए मुनि जी ने अपनी युवावस्था से ही प्रयास शुरू कर दिए थे। उन तमाम गीतों एवं दृश्यों को नाटक के रूप में इस पुस्तक में लिपिबद्ध किया गया है।

इन पुस्तकों का एक सेट मंगाने के लिए मात्र ₹100 का आर्थिक सहयोग और अतिरिक्त डाक खर्च देना होगा। इन पुस्तकों को एक साथ मंगाने के लिए सम्पर्क करें–8318621282, 7869250001, 9617079344

हमारी संस्थाएँ

■ मार्गदर्शक समाजिक शोध संस्थान ■ ज्ञानयज्ञ परिवार

संस्थान के कार्य ■ समाज विज्ञान पर विश्वव्यापी रिसर्च तथा निष्कर्ष निकालना।

परिवार का कार्य

■ देश भर में ज्ञान केन्द्रो का इस तरह विस्तार हो कि वहाँ स्वतंत्र विचार मंथन हो तथा संवाद प्रणाली विकसित हो।

कार्यक्रम

■ ज्ञान चर्चा –प्रतिदिन शाम साढ़े आठ से साढ़े नौ बजे तक किसी एक पूर्व घोषित विषय पर स्वतंत्र वेबिनार।

■ महायज्ञ – वर्ष में एक बार या दो बार बड़े सामुहिक यज्ञ का आयोजन।

■ मार्गदर्शक मंडल – ऐसे न्यूनतम पाँच सौ लोगों की टीम तैयार करना जो समाज विज्ञान पर रिसर्च करने की क्षमता रखते हैं।

■ ज्ञान कुंभः– वर्ष मे दो बार पंद्रह–पंद्रह दिनो के ज्ञान कुंभ जिसमें मार्गदर्शक मंडल के लोग स्वतंत्र विचार द्वारा प्रतिदिन दो–दो विषयों पर निष्कर्ष निकाल कर समाज को दें।

माध्यम

- ज्ञान तत्व पाक्षिक पत्रिका
- यू टयूब चैनल
- फेसबुक एप से प्रसारण
- इंस्टाग्राम
- वॉट्सऐप ग्रुप से प्रसारण
- टेलीग्राम
- जूम एप पर वेबिनार
- कू एप

ज्ञानतत्व पाक्षिक पत्रिका का माह में दो प्रति का प्रकाशन सुचारू रूप से होना शुरू हो गया है इसकी सहयोग राशि रू. 100/– वार्षिक अभी तय किया गया है लेख प्रस्तुती आदि पर सुझाव अवश्य दें।

पंजीकृत पाक्षिक
पंजीकरण क्रमांक–68939/98

डाक पंजीयन क्रमांक–छ.ग./रायगढ़/10/209–2021

प्रति,

श्री/श्रीमती _____

_____

_____

_____

संदेश

वर्तमान संसदीय लोकतंत्र में तो संसद एक जेल खाना है। जहां हमारा भगवान रूपी संविधान कैद है। भगवान को जेलखाने से मुक्त कराना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। संसदीय लोकतंत्र को सहभागी लोकतंत्र में बदलना ही होगा। लोक संसद के लिये आंदोलन इसका प्रारंभिक चरण है। लोक स्वराज्य मंच ने इसकी पहल की है। लोक स्वराज्य मंच से जुड़िये और अपने भगवान को जेलखाने से मुक्त कराने की पहल कीजिए।

पत्र व्यवहार का पता

पता - बजरंग लाल अग्रवाल पोस्ट बॉक्स 15, रायपुर (छ.ग.) 492021
website : www.margdarshak.info

प्रकाशक, सम्पादक व स्वामी - बजरंगलाल
09617079344
Email : bajrang.muni@gmail.com
Support@margdarsgak.info
Facebook Id : **बजरंग मुनि** (User Name)

मुद्रक- माया प्रेस रामानुजगंज, सरगुजा (छ.ग.)